ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 467-469
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

अटल बिहारी वाजपेयी की गठबन्धन राजनीति

प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी
श्री जयेन्द्र सरस्वती वेद पाठशाला,चित्रकूट (उ0 प्र0), भारत

Received- 07.08.2020, Revised- 12.08.2020, Accepted - 16.08.2020 E-mail: rmppt123@gmail-com

सारांश : *महामानव में अपनी अन्तरदृष्टि होती है। वह इतिहास के प्रवाह को समझकर भावी योजनाएँ गढ़ता है। व्यापक मानवीय संवेदना से अनुप्राणित होकर वह महामानव, मानवता के भविष्य की संकल्पना करता है, साथ ही अन्तरदृष्टि की इन संकल्पनाओं को चरितार्थ करने का प्रयत्न भी करता है। वह पूर्व निर्मित पगडंडियों का त्याग कर रपटीली राहों पर चलकर सृजन स्वयं करता है। अटल बिहारी वाजपेयी विराट व्यक्तित्व वाले ऐसे ही महामानव थे। उनका जीवन सदैव भारत एवं भारतीयता के उत्थान के लिए समर्पित रहा। शुचितापूर्ण, नैतिक, मानवीय आदर्श व्यवहार की राजनीति के प्रबल पुरोधा वाजपेयी ने भारतीय राजनीति में गठबन्धन की राजनीति एवं आम सहमिति की राजनीति को आदर्श व्यवहाय का अमलीजामा पहनाकर राजनीतिक जगत में सिद्धान्त के रुप में प्रतिष्ठित किया।*

कुंजीभूत शब्द– महामानव, अन्तरदृष्टि, व्यापक मानवीय संवेदना, अनुप्राणित, मानवता, संकल्पना, रपटीली, अमलीजामा।

विषाल लोकतान्त्रिक राष्ट्र भारत में ''एक गरीब मास्टर के लड़के का धूल और धुएँ से भरी बस्ती से उठकर लाल किले की प्राचीर तक पहुँचना और स्वतन्त्रता के अवसर पर तिरंगा फहराना भारतीय लोकतन्त्र की शक्ति और क्षमता को उजागर करता है''1 इस लोकतन्त्र के सजग प्रहरी के रुप में अटल ने एक अर्द्धशती तक एक प्रखर वक्ता, कुशल राजनेता एवं भारत के प्रधानमन्त्री पद को अलंकृत किया। वाजपेयी सदैव राजनीतिक शुचिता के प्रति सजग एवं प्रतिबद्ध रहे। उनका मानना था कि, राजनेता को निश्कलंक और उसके जीवन को पारदर्शी होना चाहिए। उन्होनें स्वयं अपने व्यक्तिगत जीवन में इसकी स्थापना की। उनके निर्विवाद एवं भ्रष्टाचारविहीन आदर्श राजनीतिक जीवन यात्रा से, सदैव सम्पूर्ण जनमानस को प्रेरणा मिलती रहेगी। भारतीय राजनीति में वाजपेयी ने प्रधानमन्त्री के रुप में गठबन्धन की सफल राजनीति आदर्श स्वरुप को प्रस्तुत करने के साथ, संविद सरकार में राष्ट्र को विकास की नयी ऊचाईयों तक पहुँचाया।

90 के दशक में भारतीय राजनीति में सरकारों की अस्थिरता, अल्पमत–बहुमत, राजनीतिक भ्रष्टता, दल–बदल की समस्याएँ अपने पाँव पसारे हुई थीं। ऐसे समय में भी अटल ने पवित्र साध्य के लिए साधन की पवित्रता पर बल दिया। ग्यारहवीं लोकसभा चुनाव में सबसे बड़े दल के रुप में उभरी भारतीय जनता पार्टी के नेता के रुप में, उन्हें सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया गया। उन्होंने सरकार बनायी भी, परन्तु सदन में बहुमत सिद्ध न हो पाने की स्थित में अल्पमत का बहुमत में बदलने के कोई अनैतिक प्रयास नहीं किये। परिणामतः सरकार गिर गई और भारत एक बार पुनः मध्यावधि चुनाव के बोझ तले दब गया। परन्तु वाजपेयी ने शुचिता, नैतिकता, एवं आदर्श राजनीति का जो स्वरुप प्रस्तुत किया वह सभी के लिए आदणीय बन गया।

भारतीय राजनीति में वाजपेयी ने गठबन्धन राजनीति का सफल प्रयोग किया और उनकी सरकार ने कार्यकाल पूरा कर दिखाया। इतना ही नहीं, अपितु वाजपेयी के इस गठबन्धन सरकार के कार्यकाल में भारत का तीव्र एवं बहुमुखी विकास हुआ। अस्थिरता के उस दौर में अटल द्वारा सफल गठबन्धन सरकार की सर्वत्र प्रशंसा की गयी, जो उनकी राजनीतिक चातुर्य एवं सच्चे अर्थो में उच्च कोटि के राजनेता के रुप में स्थापित करती है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हम देखें तो स्पष्ट होता है कि, स्वतन्त्र भारत की राजनीति में,चतुर्थ आमचुनाव (1967–1971) के पश्चात भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों के गठबन्धन की एक नयी प्रवृत्ति का उदय हुआ। परिणामतः भारत में प्रान्तीय स्तर पर अनेक गठबन्धन सरकारें बनीं। जिससे राजनीतिक गलियारें में राज्यों से कांग्रेस के एकाधिकार को समाप्त करने के रुप में देखा गया, परन्तु यह प्रयोग सफल नहीं हो सका। ऐसी सरकारों की विफलता ने राजनीतिक विश्लेषकों को यह मानने के लिए बाध्य किया कि, ''Parliamentary Government and coalitions do not go together.''2 राजनीति में ऐसी सरकारों को विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है– यथा ''संविद सरकार, संयुक्त मोर्चा मन्त्रिमण्डल, जनता मोर्चा सरकार, मिली–जुली सरकार।''3 ये सरकारें विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा विशिष्ट प्रयोजन हेतु मिलकर तत्परतापूर्वक कार्य करने का परिणाम है। संयुक्त सरकारें राजनीतिक दलों द्वारा शक्ति के रुप में अस्थायी तथा विशिष्ट प्रयोजनों के लिए किया गया गठजोड़ होता है। डॉ0 कश्यप एवं गुप्ता लिखते हैं कि ''संसदीय शासन–प्रणाली में राजनीतिक दलों का संघट्ट, सरकारों का निमार्ण करने अथवा उनकी रक्षा करने के लिए बनाया जाता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

है। जिन दलों के सहयोग के फलस्वरुप संयुक्त सरकारों का निमार्ण होता है, वे एक बुनियादी राजनीतिक कार्यक्रम के ऊपर एक मत होती है।''4

वस्तुतः भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात राज्य अथवा केन्द्र में जहाँ भी गठबन्धन सरकारें बनीं, उनका स्वरुप कुछ ऐसा ही रहा। स्वातन्त्रोत्तर भारत में कांग्रेस के अतिरिक्त 'जनसंघ', 'मुस्लिमलीग', 'हिन्दु महासभा', 'समाजवादी दल', 'साम्यवादी दल' जैसे अनेक राजनीतिक संगठन विद्यमान रहे,परन्तु स्वतन्त्रता आन्दोलन काल में शीर्ष भूमिका निभाने वाली कांग्रेस पार्टी के प्रति आदणीय एवं विश्वसनीयता का भाव होने के कारण स्वतन्त्रता पश्चात भी भारतीय राजनीतिक दल के रुप में प्रभावशाली स्थान होने के साथ ही भारत की प्रजातान्त्रिक संसदीय प्रणाली में केन्द्र एवं राज्यों में लम्बे समय तक सत्तासीन रही और बहुविधि भारतीय राजनीति को प्रभावित करती रही। तृतीय आमचुनाव के परिणामों से कांग्रेस में नेृतत्व का अभाव एवं असंतोष स्पष्ट परिलक्षित हुआ, जिसने राजनीतिक दलों को पुनर्विचार करने का अवसर प्रदान किया। डा0 राममनोहर लोहिया ने माना कि, ''चुनावों में कांग्रेस की विजय का कारण गैर–कांग्रेसी दलों में एकता का अभाव है।''5इस निष्कर्ष के उपरान्त उन्होंने कांग्रेस के विरुद्ध गैर–कांग्रेसी दलों को लामबन्द करने का प्रयास प्रारम्भ किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी उस समय जनसंघ की ओर से लोकसभा सदस्य थे। लोहिया, राजनीतिक दलों को कांग्रेस के विरुद्ध एकजुट करने में सफल तो हुए परन्तु विपक्षी दलों की मंशा कांग्रेस को सत्ता से च्युत करने की दिखी, न कि वैचारिक एवं कॉमनमिनिमम प्रोग्राम के तहत एकजुट होने की। ''विरोधी दलों ने देखा कि संयुक्त मोर्चा बनाकर कांग्रेस को हरा सकते हैं। क्योंकि कांग्रेस को कभी भी देश भर में 45% अधिकमत नहीं प्राप्त हुए। इस नीति के प्रमुख प्रतिपादक थे डा0 राममनोहर लोहिया।''[6] डा0 लोहिया का स्वप्न था, कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करना। इसके लिए वे विरोधी दलों को मिलाने का प्रयास किये और अपनी इस राजनीति में काफी हद तक सफल भी रहे। क्योंकि उन्ही के प्रयासों से ही चतुर्थ आम चुनाव के पश्चात उत्तर प्रदेश सहित आठ राज्यों में गठबन्धन सरकारें बनी। यद्यपि ये सरकारें कार्यकाल पूरा नहीं कर सकीं। परन्तु कांग्रेस का विकल्प अवश्य बनीं। राज्यों में आगे भी गठबन्धन का प्रयोग जारी रहा।

केन्द्र में सर्वप्रथम गठबन्धन सरकार 1977 में बनी, जो भारतीय राजनीति में एक परिवर्तनकारी घटना थी। कांग्रेस से इतर राजनीतिक दलों ने अपना विलय पूर्ण या आंशिक रुप से करके 'जनता पार्टी' के रुप में एक नये राजनीतिक दल का गठन कर, इस आमचुनाव में विजयश्री हासिल की तथा केन्द्र में सत्तासीन हुए। इस सरकार में विदेश मन्त्री रहे वाजपेयी कहते हैं कि ''1975–1977 में तत्कालीन सरकार ने देश पर आपातकाल थोपा था। ..... अनेक दल जिन्होंने लोकतन्त्र बहाल करने का वायदा किया, उन्हें सत्ता में बैठाया गया। वह पहली गठबन्धन सरकार थी। वह सरकार किन्हीं सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण नहीं, अपितु कुछ नेताओं की व्यक्तिगत महात्वाकांक्षाओं के चलते असफल रही।''[7] परन्तु यह सरकार जनता पार्टी में पड़ी फूट एवं गुटबन्दी के कारण कार्यकाल पूर्ण करने में असफल रही। पुनः गठबन्धन से अलग हो चुके,चौधरी चरण सिंह ने ''29 जुलाई 1979 में जनता दल (एस) तथा कांग्रेस (अर्स) के साथ गठबन्धन कर सरकार का गठन किया।''8 परन्तु यह प्रयोग भी असफल रहा, लिहाजा मध्यावधि लोकसभा चुनाव हुए।

गठबन्धन सरकारों का दूसरा दौर केन्द्र में 9वीं लोकसभा चुनाव में पुनः प्रारम्भ हुआ। क्योंकि किसी दल को स्पश्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। इस नये गठबन्धन में वी0 पी0 सिंह के नेतृत्व में 'राष्ट्रीय जनता मोर्चा' की सरकार बनीं। जनता दल के साथ अन्नाद्रमुक, तेलगूदेशम् असमगणपरिषद जैसे क्षेत्रीय दल सम्मिलित हुए, साथ ही भाजपा एवं माकपा का इस सरकार को वाह्य समर्थन प्राप्त था, परन्तु यह सरकार भी कार्यकाल पूर्ण करने में असफल रही। कारण ''राष्ट्रीय मोर्चा विशेषतः जनता दल अपनी एकता बनाये नहीं रख सका। पहले दिन ही आपस में जो अविश्वास पैदा हो गया अन्त में सरकार भी ले डूबा।''[9] इसी समय जनता दल के सांसद ''श्री चन्द्रशेखर ने 66 सांसदों के साथ जनता दल से अलग होकर कांग्रेस के वाह्य समर्थन से सरकार बनायी।''[10] यह प्रयोग भी असफल हुआ। राजनीतिक अस्थिरता के कारण दसवीं लोकसभा चुनाव सम्पन्न हुए। कांग्रेस (आई) सबसे बड़े दल के रुप में उभरी। परन्तु बहुमत न होने पर भी देश पर पुनः चुनाव का भार न पड़े, संवैधानिक रुप से अल्पमत सरकार पी0 वी0 नरसिम्हा राव के नेतृत्व में कांग्रेस (आई) ने गठित किया। इस सरकार ने अपना कार्यकाल पूर्ण किया।

1996 में ग्यारहवीं लोकसभा चुनाव में उलट–फेर करते हुए अटल के नेतृत्व में भाजपा सबसे बड़े दल के रुप में उभरी, परन्तु बहुमत से दूर थी। भाजपा को बड़े दल के रुप में सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया गया, परन्तु गठबन्धन के बावजूद भाजपा, बहुमत के जादुई आकड़े तक पहुँचने में असमर्थ रही। संतोष इस बात का रहा कि पूर्व में खरीद–फरोख्त एवं दल–बदल जैसे कुत्सित प्रयोग वाजपेयी नहीं किया, जो जनता–जनार्दन के लिए भ्रष्टाचार के विरुद्ध आदणीय उदाहरण बना। 28 मई 1996 को सदन में

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

आत्मविश्वास लबरेज वाजपेयी ने जो भाषण दिया, उससे राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेन्स की नीति का संकेत प्राप्त होता है। उन्होंने ने कहा ''हमने अल्पमत को बहुमत में बदलने के लिए सूटकेसों का उपयोग नहीं किया।''11उन्होंने ने अपना इस्तीफा राष्ट्रपति को सौंप दिया। इस घटना क्रम का भारतीय राजनीति पर व्यापक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा। ''वाजपेयी उस दिन भले ही बाजी हर गये हों, लेकिन अगली बार की जीत पक्की कर ली 1998 के मध्यावधि चुनाव में नारा बना–'द मैन इण्डिया अवेट्स, अबकी बारी अटल बिहारी''[12] इन घटना क्रमों में 1996 से 1999 के मध्य भारत ने वाजपेयी, देवगौड़ा, एवं गुजराल सरकारों के अस्थायी कार्यकाल को देखा और स्पश्ट हुआ कि गठबन्धन राजनीति के ये पारम्परिक प्रयोग असफल रहे।

1998 के लोकसभा चुनाव में वाजपेयी ने गठबन्धन राजनीति का दूसरा प्रयोग किया। अपने सहयोगी दलों के साथ संयुक्त घोषणा पत्र पर चुनाव लड़ने का निश्चय किया। फिर भी यह राजग गठबन्धन बहुमत से दूर रहा, परन्तु इस गठबन्धन में विश्वसनीयता और पारदर्शिता थी। 'तेदेपा' के वाह्य समर्थन से वाजपेयी ने दूसरी बार प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली और सदन में बहुमत सिद्ध किया। यह, वह ऐतिहासिक कालक्षेपथा जब, ''अटल जी ने 22 दलों को मिलाकर 'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन' किया था।''[13] देश में अस्थिरता के महौल में वाजपेयी का एक अल्पकालिक किन्तु सकारात्मक कदम, यह गठबन्धन सिद्ध हुआ। यह सरकार मात्र 13 माह तक ही कार्यकाल पूरा कर पायी। परन्तु वाजपेयी की कर्तव्यनिष्ठा, राष्ट्रोन्नति की धारणा को राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुयी। इस अल्पकालीन सरकार में 'परमाणु परीक्षण', 'कारगिल युद्ध' एवं 'लहौर बस यात्रा'के रुप में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी। परन्तु राजनीतिक सुरसा ने पुनः मुहँ पसारा और सरकार गिर गयी। किन्तु यह सिद्ध हो गया कि गठबन्धन सरकार भी राष्ट्र को विकास की ऊँचाईयों तक ले जा सकती है। तेरहवीं लोकसभा चुनाव में वाजपेयी ने अपने पूर्व के प्रयोग को दोहराया। उन्होंने घोषणा की कि, ''देश मिली–जुली सरकारों के दौर में प्रविष्ट हो चुका है, दो बड़े दलों के रुप में कांग्रेस और भाजपा के उभरने के साथ ही क्षेत्रीय दल भारतीय राजनीति के अटूट अंग बन गये हैं। केन्द्र में भी वे अटूटभूमिका निभायेंगे।''[14] इस विश्वास के साथ लोकसभा चुनाव सम्पन्न हुए एक बार पुनः वाजपेयी राजग गठबन्धन के रुप में बहुमत के आँकड़े से आगे निकल गये और तीसरी बार प्रधानमन्त्री बने और इस गठबन्धन सरकार ने कार्यकाल पूरा करने के साथ विश्वासपूर्ण गठबन्धन एवं आमसहमति की राजनीति को नये प्रयोग के रुप स्थापित किया। इस प्रयोग का अनुसरण करते हुए दूसरे सबसे बड़े राजनीतिक दल कांग्रेस ने क्षेत्रीय दलों को एकत्रित कर 'संप्रग' नाम से एक नया और सफल गठबन्धन बनाया। आगे चलकर राजग एवं संप्रग दोनों ही गठबन्धन की राजनीति के आधार बने। यहाँ, यह महत्वपूर्ण नहीं कि सरकार किस गठबन्धन की बनीं, अपितु एक राजनीतिक संस्कृति के रुप में यह गठबन्धन सरकारों के रुप में स्थापित हुए। जिसके मानक वाजपेयी द्वारा गढ़े गये थे। आज भारत के राष्ट्रीय परिदृश्य में वाजपेयी मनमोहन सिंह के पश्चात नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सफल गठबन्धन सरकार का संचालन किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विचार–बिन्दु सं0, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा पृ0 सं0 15
2. Politics: National and International, Prem Bhasin पृ0 सं0 66
3. भारतीय शासन एवं राजनीति, लेखक बी0 एल0 फाड़िया एवं पुखराज जैन पृ0 सं0 712
4. राजनीतिक कोष, कश्यप एवं गुप्ता पृ0 सं0 15
5. भारतीय शासन एवं राजनीति, लेखक बी0 एल0 फाड़िया एवं पुखराज जैन पृ0 सं0 713
6. वहीं
7. गठबन्धन राजनीति, सं0 डॉ0 नारायण माधव घटाटे पृ0 सं0 09
8. भारतीय शासन एवं राजनीति, लेखक बी0 एल0 फाड़िया एवं पुखराज जैन पृ0 सं0 726
9. विचार–बिन्दु सं0, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा पृ0 सं0 45
10. गठबन्धन राजनीति, सं0 डॉ0 नारायण माधव घटाटे पृ0 सं0 09
11. गठबन्धन राजनीति, सं0 डॉ0 नारायण माधव घटाटे पृ0 सं0 419–420
12. हार नहीं मानूँगा, लेखक विजय त्रिवेदी पृ0 सं0 119
13. अटल बिहारी वाजपेयी, लेखक एम0 आई0 राजस्वी पृ0 सं0 106
14. मेरी संसदीय यात्रा प्रथम खण्ड, सं0 डॉ0 नारायण माधव घटाटे पृ0 सं0 24

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*